



वेटिकन का एक खर्च जो है ही नहीं

FERDINANDO FREGA · GILLETTENARRATIVE · GILLETTEVATICANO · 14/17

वेटिकन ने हाल ही में कार्डिनलों और परमपिता के पारिश्रमिक के बारे में जानकारी प्रकाशित की।

आँकड़े खुद में कोई खास हैरान करने वाले नहीं हैं। कहा जाता है कि बहुत से कार्डिनल, खासकर वेटिकन के भीतर सेवा करने वाले, हर महीने €3,000 से €5,000 के बीच पाते हैं।

हैरान करने वाली बात कुछ और ही है।

पोप का आधिकारिक वेतन शून्य है।

वेटिकन उनकी निजी ज़रूरतें और खर्चें सीधे उठाता है।

पहली नज़र में यह नेक, बल्कि सराहनीय लग सकता है। यह पद के आध्यात्मिक स्वभाव के अनुरूप जान पड़ता है, और उस चर्च की परंपरा के भी, जो लंबे समय से सेवा और निजी संपन्नता में फ़र्क़ करता आया है।

फिर भी जितना इस पर सोचिए, उतना ही एक सीधा मानवीय सवाल उभरता है।

अगर पोप एक अख़बार, एक आइसक्रीम, पानी की एक बोतल ख़रीदना चाहें, या बस एक कॉफ़ी का पैसा देना चाहें, तो क्या वे यह पूरी तरह अपने बूते कर सकते हैं?

सवाल पैसे की मात्रा का नहीं है।

सवाल स्वायत्तता का है।

ऐसा जीवन जिसमें हर निजी खर्च कोई संस्था सोख लेती है, वह जीवन भी है जिसमें निजता ग़ायब हो सकती है, एकांत दुर्लभ हो जाता है, और सबसे छोटा निजी काम भी प्रशासनिक मामला बन जाने का ख़तरा उठाता है।

और फिर भी, परम पावन होने से पहले, वे एक आदमी हैं।

एक आदमी जो किसी परिवार में जन्मा।

एक आदमी जिसके दोस्त, यादें, रिश्तेदार और निजी लगाव हैं।

एक आदमी जिसे, धरती की सबसे कठिन ज़िम्मेदारियों में से एक ढोने के बावजूद, अपने संसाधनों का कम से कम एक छोटा हिस्सा खुद सँभालने की गरिमा मिलनी चाहिए।

यह इंतज़ाम किसी आध्यात्मिक सिद्धांत से कम और किसी और युग की विरासत ज़्यादा लगता है।

कोई धार्मिक अवशेष नहीं।

एक प्रबंधकीय अवशेष।

इस खयाल ने मुझे एक सीधा विकल्प सोचने को प्रेरित किया।

कोई आर्थिक सुधार नहीं।

मानवीय यथार्थ के हिसाब से ढाला गया एक कॉरपोरेट रिवाज।

अगर कार्डिनल हर महीने €3,000 से €5,000 के बीच पाते हैं, तो पारिश्रमिक को इस तरह क्यों न ढाला जाए:

— एक तयशुदा मूल भत्ता।

— मापे जा सकने वाले लक्ष्यों से जुड़ा एक हिस्सा।

— गुणात्मक योगदानों से जुड़ा एक हिस्सा।

— और परमपिता के लिए एक प्रतीकात्मक मान्यता, जो संस्था की आमदनी के एक छोटे प्रतिशत के बराबर हो।

पोप को अमीर बनाने के लिए नहीं।

आस्था का व्यापार करने के लिए नहीं।

चर्च को कंपनी में बदलने के लिए नहीं।

बस ज़िम्मेदारी को मान्यता से जोड़ने के लिए।

हर संगठन में, नेतृत्व अंततः अपनी ताकत उन्हीं लोगों से पाता है जिनकी वह सेवा करता है और जिन्हें वह जोड़ता है। समुदाय जितना मज़बूत, संस्था उतनी मज़बूत। संस्था जितनी मज़बूत, उसके नेतृत्व की वैधता उतनी बड़ी।

वेटिकन कोई कंपनी नहीं है।

पर धरती की सबसे दिखने वाली धार्मिक हस्ती को भी उस विरोधाभासी स्थिति में नहीं रखा जाना चाहिए, जहाँ वह विशाल अधिकार चलाए और उसके पास निजी आर्थिक स्वायत्तता ज़रा भी न हो।

यह धर्मशास्त्रीय दलील नहीं है।

यह मानवीय दलील है।

दो हज़ार साल से चर्च सहभागिता, एकजुटता, और यह विचार सिखाता आया है कि ताकत अलगाव से नहीं, एकता से आती है।

शायद यह सिद्धांत सबसे ऊपर भी लागू होना चाहिए।

क्योंकि अकेले व्यक्ति शायद ही कभी मज़बूत होते हैं।

ताकत हमेशा जुड़ाव से बनती है।

और अगर यह सबक विश्वासियों के लिए सच है, तो उस आदमी के लिए भी सच होना चाहिए जिसने अपनी ज़िंदगी इसे सिखाने में लगाई है।

यीशु मसीह की स्तुति हो।

पुनश्च — मैं सोचता रह गया: अगर परम पावन पूरी तरह संस्था पर निर्भर हैं, और कोई उन्हें एक डॉलर भी उधार नहीं देता, तो वे मुझसे मिलने कैसे आएँगे?

Ferdinando